Vol 3 Issue 10 Nov 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-10, Nov-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

समकालीन हिन्दी कहानियों चित्रित समसामयिक समस्याएँ

अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग सोनुभाऊ बसवंत कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शहापुर, महाराष्ट्र.

सारांश : नगर का बृहत् रूप महानगर है, जो अंग्रेजी के मेट्रो पोलिटन शब्द का पर्यायवादी है । महानगरों की चकाचौंध को देखकर व्यक्ति तेजी से उस ओर खिंचा चला जा रहा है । आज स्थित यह है कि हर को नगरों की भीड में समाहित होकर उसका एक हिस्सा बन जाना चाहता है ।

नगरों में रहने वालों की परिस्थिति भिन्न–भिन्न होती है । सभी वर्गों के लोग अपनी–अपनी हैसियत के अनुसार ही जीवन–यापन करते हैं । अधिक सफलता के कारण व्यक्ति के दृष्टिकोण एवं सोच में परिवर्तन होने लगता है । इस भौतिकवादी युग में हर वर्ग शान–शौकत की जिन्दगी जीना चाहता है । दिन पर दिन बढती महॅगाई से भी व्यक्ति तंग होता जा रहा है । नौकरी पैशे वाला व्यक्ति ऐसे में अपनी सन्तान को शिक्षा और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जी–तोड मेहनत करता है ।

प्रस्तावना :

आर्थिक तंगी समाज और व्यक्ति के लिए कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न कर देती है । आज के यन्त्र–युग में मातृत्व की भूख भी अर्थव्यवस्था के सामने ढह गयी है । सुधा अरोडा की कहानी 'महानगर की मैथिली 'में मैथिली के माता–पिता उसकी छोटी–छोटी इच्छाएँ पूरा नहीं कर पाते । उसकी बीमारी में चाहकर भी माता–पिता घर में ठहर नही पाते । मैथिली विवश माता–पिता की रुटीन जिन्दगी से भली–भॉति परचित है । " वह मम्मी–पापा के जाने बाद चावियॉ संभाल लेती, चन्दाबाई के आगमन पर वह बाकायदा दरवाजा खोलती, उससे काम करवाती, मेज पर ढका हुआ खाना खाती, स्कूल जातीं ।"

अर्थ के कारण आज रिश्ते भी मानों अपना अर्थ खोते जा रहे हैं । बीमार मॉ की देखरेख करना तो दूर दो मीठे बोल भी बोलना बेटे के लिए भारी हो गया है । सविता बैनर्जी की कहानी 'जीने के लिए' का बेटा बीमार माता के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के बजाय उल्टे मॉ पर ही खीजता उठता है । तनख्वाह के लिए कितनी मशक्कत करनी पडती है । वह सोचता है– क्या महिने के आखरी सप्ताह में ही मॉ को बुखार आना था । मॉ ने दीदी को फोन क्यो करवाया ?क्या बुखार एक दो दिन में अच्छा नही हो जाता ? डॉक्टर और दवा कि लिए भी तो पैसों की जरूरत होगी ? क्या मॉ को नही मालून की वह महीने का आखिरी सप्ताह है?वह कैसे भूल गयी कि उनकी छोटी बेटी की फीस इसी महीने भरी गयी है । वह कैसे भूल गयी कि रिश्तेदारों की दो–दो शादियों में सौ रुपये खत्म हो गये ?[2] योगेश गुप्त नें ' भीड नं. दो ' कहानी में यह रेखांकित किया है कि मेहन करने वाले इंसान की मनोदशा कारखाने की हडताल और घर की चुप्पी के बीच क्या हो सकती है ?इसी तरह मिथिलेश्वर ने 'जिंदगी का एक दिन ' कहानी में एक ईमानदार क्लर्क के जीवन को चित्रित किया है, जिसे घर चलाने के लिए जी–तोड मेहनत करनी पडती है । इसके बावजूद भी आर्थिक कठिनाईयों से मुक्ति नहीं मिलती । वे सोचते हैं – " इतना संघर्ष करता हूँ, इतनी मितव्ययिता से काम चलाता हूँ, तब भी उनके परिवार की हालत इतनी कमजोर रहती है । अगर उनकी नौकरी छूट जाये तो किसी दुर्घटना के वे शिकार हो जायें, तब उनका परिवार कैसे रहेगा ?"[3] आज आर्थिक स्थितियॉ कुछ इस प्रकार बिगड गई है कि व्यक्ति खून के रिश्ते को भूलकर बहन को भी दॉव पर लगाने से नही चूकता । 'जहॉ लक्ष्मी कैद है' (राजेंद्र यादव), 'काला रोजगार' (मोहन राकेश) कहानियों में भाई मुंबई शहर में अपनी बहन के जिस्म की कमाई पर ऐशों–आराम की जिन्दगी गुजारता है । मानो अर्थ के आगे भाई–बहन के रिश्ते बेमानी हो गये हैं । आर्थिक तंगी के कारण कई बार चाहकर भी व्यक्ति अपने लिए घर नहीं बनवा पाता । यदि किसी तरह बनवाता भी है तो कितनी कठिनाईयों का सामना करना पडता है इसे धमेंन्द्र गुप्त की 'सर्वहारा' कहानी में देखा जा सकता है ।

ऊषा प्रियवंदा की 'जिन्दगी और गुलाब के फूल 'कहानी में भाई की नौकरी छूटना । मन्नू भण्डारी की 'कील की कसब ' के कैलाश का कर्ज से मुक्त होने के लिए रात–दिन प्रेस में काम करता है । जितेन्द्र भाटिया की 'ब्लैंड' कहानी के नायक के घर की तंग दशा । गोविन्द मिश्र की 'गुरुजी' कहानीमें नोकरी की तलाश में दौड–धूप करने वाले नायक की स्थिति प्रेम सिंह नेगी की 'अस्तित्व के लिए', मेहरून्निसा परवेज की 'विद्रोह' आदि कहानियों में आर्थिक अभावों की अभिव्यक्ति हुई है ।

आधुनिक युग में मनुष्य भी एक यंत्र बनता जा रहा है आधुनिकता जहॉ एक ओर व्यक्ति के लिए वरदान सिध्द हुई वहीं दूसरी और अभिशाप भी है । आधुनिक युग में नगरीकरण, बौध्दिकता और अति–भौतिकता ने सम्बन्धों में एक तरह से अपरिचय, अजनबीपन और पारयेपन को जन्म दिया है । अलगावबोध या परायापन के सम्बन्ध में डॉ. ब्रजमोहन शर्मा की मान्यता है – " आधुनिक जीवन में अलगाव या परायापन दो स्तरों पर महसूसा जाता है । एक तो जिन्दगी की भाग–दौड मे जब आदमी को अपने इर्दगिर्द से न तो सहानुभूति मिलती है और न प्रोत्साहन, दूसरे, जब वह जिन्दगी की तिक्त भूमिकाओं से गुजरते हुए बाहर या दप्तर सर्वत्र परायापन अनुभव करता है ।"

ऊषा प्रियवंदा के वापसी में गजाार बाबू रिटायर होने के बाद अपने परिवार वालों के बीच, अपनों के रवैये से अकेलेपन का अहसास करने लगते हैं । अतः गजाधर बाबू का अकेलापन विवशता का अकेलापन है । राजी सेठ की कहानी 'उसका आकाश' एक ऐसे बीमार की दयनीय कथा है जो बीमारी को मृत्यु से भी कष्टदायक मानता है । वह महसूस करता है कि सभी उसके मरने का इंतजार कर रहे हैं । परिवार वालों की व्यस्तता के कारण वह अकेलेपन में जी रहा है । थोडी बहुत फुर्सत मिलने पर बेटा अवश्य हालचाल पूढ लेता है । "कैसे है बाबूली ! आज कैसा लग रहा है ।" इस प्रकार बेटे द्वारा इस तरह पूछना भी बाप को बेमानी लगता है ।

निर्मल वर्मा की 'परिंदे' कहांनी में नियति के अकेलेपन की यातना को जी रही लतिका चाहकर भी छुटकारा नहीं पाती । अजीब सी छटपटाहट उसे गला रही है । जहॉ वह कहती हैं– " अब इस अकेलेपन से कोई गिला नहीं, उलाहना नहीं, सब खींचातानी खत्म हो गयी, जो अपना है वह बिल्कुल अपना–सा हो गया है, जो अपना नहीं, उसका दुःख अपनाने की फुर्सत नहीं..... पहले साल अकेलापन कुछ अखरा था ..... अब आदी हो गयी हूँ ।" निर्मल वर्मा की श्अंधेरे में कहानी' की बच्ची का अकेलापन है तो श्एक दिन का मेहमान' कहानी में पति पत्नी के बीच के अलगाव एवं अजनबीपन को चित्रित किया गया है । अपरिचय, अजनबीपन और परायेपन को लेकर लिखी कहानियों में – उषा प्रियवंदा की कहानी 'मोहबंध' की अंचला, मन्नू भंडारी की कहानी ' बन्द,दराजों का साथ ' की मंजरी, ज्ञानरंजन की 'शेष होते हुए' कहानी में मॉ और पिता के मध्य, गिरिराज किशोर की 'रिश्ता'कहानी में मॉ और पुत्र के बीच, दीप्ति खंडेलवाल की कहानी 'सन्धिपत्र' मे सीमा और रोहित के कांति त्रिवेदी की 'फूलों के बीच को ं क्या हो गया ', सीतेश आलोक की 'वापसी' राजेंद्र यादव, 'बिरादरी बाहर', नरेंन्द्र कोहली की 'सटल' आदि कहानियों में अजनबीपन और अलग्रावबोध की तीव्र अनुभूति व्यक्त हुई है ।

नगरीय चकाचौंध को देखकर कभी–कभी व्यक्ति के भीतर असंतोष की भावना पैदा होने लगती है तो कभी भौतिक समृध्दि और सुविधाएँ उसे आतंकित करती हैं । नगरीय तडक–भडक से प्रभावित युवा पीढी जीवन को अपने नजरियें और ढंग से जीना चाहती है । शिक्षित नवयुवक नवयुवतियॉ अपने से अयोग्य व्यक्तियों को शान–शौकत की जिन्दगी व्यतीत करते देखकर छोटेपन का एहसास करने लगते है । मध्यवर्ग का व्यक्ति कुछ सुविधापूर्वक जीने की आकांक्षा में सिर उठाता है, पर अपने छोटेपन के एहसास से पुनः उसी ढरें पर चलने के लिए लाचार होता हे । मन्नू भंडारी की कहानी 'अनचाही गहराइयॉ' का शिवनाथ भी

अनिल सिंह ,"समकालीन हिन्दी कहानियों चित्रित समसामयिक समस्याएँ"
Indian Streams Research Journal Vol-3, Issue-10 (Nov 2013): Online & Print

अपने छोटेपन का एहसास करते हुए कहता है, " इतना मत लादिये कि ढो न सकूँ। आपने जो कुछ किया और दिया उसे भी संभाल सका तो अपने को बडभागी समझूँगा ।"[5] ओमप्रकाश तिवारी की 'आंटी आप कितनी अच्छी है ' कहानी में बिंटू की मम्मी को छोटेपन का एहसास उस व्यक्त होता है जब पडोस का लडका पूढता है – 'आंटी तुम्हारा लडका कहॉ गया ?' बिटू की मम्मी को बंटी का 'तुम्हारा' शब्द दिल में गोली की तरह लगता है ।

'सखी' कहानी में रेणु श्रीवास्तव ने दर्शाया है कि छोटे और बड़ू लोगों के बीच की खााई को पाट पाना बडा कठिन हे । बचपन के संबंधों को बडे हो जाने पर उनका निर्वाह करना बडा कठिन हो जाता है । एक सखी का पति बडा अफसर है और दूसरी सची का पति उसी, अफसर, का चपरासी है । मेम साहब को देखकर बाल सखी का यह कहना – " अरे सखी, तुम हो, इस बंगले में तुम आई हो ?" मेम साहब, बाल सखी को बगैर कोई उत्तर दिये साहब के पीछे–पीछे चल देती है । अतः मानवीय मनःस्थितियों का चित्रण बडी सूक्ष्मता से किया है । इसी प्रकार नगरों में रहने वालों के छोटेपन के एहसास को श्रीमती सरयू शर्मा की कहानी श्बीच में पडी चाबी', शानी की 'बिरादरी', चित्रा मुदगल की 'लिफाफा' ब्रजकिशोर की 'रेहन रखा पौरुष' अभिमन्यु अनत की 'बर्फ की आत्मा ' आदि कहानियों में पूर्ण सफलता से अभिव्यक्त किया गया है ।

नगरों में रहने वाले व्यक्ति को रोजमर्रा के जीवन में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पडता है । बढती महंगाई, बेरोजगारी, बीमारी जैसी अनगिनत समस्याओं को हल करते–करते अक्सर उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है । जब व्यक्ति की आस्था घटने लगती है तभी उसके समक्ष बौध्दिक संकट उत्पन्न होने लगता है । वह एक तरह से भय महसूस करने लगता है । अक्सर यही भय मृत्युबोध में बदल जाता है । इस प्रकार चाहकर भी संत्रास, असंतोष व भय से मुक्त नहीं पो पाता । नगर का व्यक्ति अरक्षित होने के कारण भी संत्रस्त है । जैसा कि कहा गया है –" अस्तित्व का संकट ही संत्रास को जन्म देता है ।" समकालीन कहानीकारों ने संत्राास व मृत्युबोध को अपनी कहानियों में बडे ही सशक्त ढंग से चित्रित किया है ।

निर्मल वर्मा की कहानी 'बीच बहस में' के पारिवारिक सदस्य बुढे पिता की बीमारी से संत्रस्त हैं । मॉ और बेटा दोनों बीमार पिता से छुटकारा चाहते हैं । पिता भी घरवालों के रवैये से त्रस्त है । पत्नी और बच्चों को छोडकर आया हुआ बेटा सोचता है कि " उसके बच्चे अपने पिता के जाने की उसी तरह प्रतीक्षा कर रहे होंगे जैसे वह अपने पिता के जाने की ।" इसी तरह निर्मल वर्मा की 'पराये शहर में ' का 'मैं' भी अजनबी शहर मे ंआर और 'मायादर्पण' कहानी की तरन भी बाबू के अकेलेपन से संत्रस्त है । माणिका मोहिनी की कहानी 'मायकल' में बेटी शराबी पिता से त्रस्त है । वह कहती है – " पापा मैं कब तक आपको इस तरह उठाती रहूँगी ?" शानी के 'गुलमोहर का पेड' कहानी की साहिरा इसरार भाई की बेकारी और गैर जिम्मेदारी सें संत्रस्त है । नफीस अफरीदी की 'दूसरी दुनिया' एवं अनेक कहानीकारों को कहानियॉ संत्राास व मृत्यु बोध से साक्षात्कार कराती है ।

आधुनिकता ने नगरीय जीवन में मूल्यों का विघटन कर दिया है । आज के भाग–दौड के जीवन में व्यक्ति सम्बन्धों को तेजी से भुलाता चला जा रहा है । आत्मीयता के स्थान पर औपचारिकताएँ ज्यादा दिखलाई पडती हैं । स्वार्थ, धोखाघडी और छलकपट के कारण मानव का मानव पर से विश्वास खंडित होने लगा । धन दौलत के मोह ने आपसी खून के रिश्तों में भी दरार डाल दी है । भाई–भाई, भाई–बहन, पति–पत्नी, माता–पिता जैसे सम्बन्ध भी बेमानी लगने लगे है । बेबसी, लाचारी ने भी नगरीय व्यक्ति के बहुत से सम्बन्धों को तरस नहस कर दिया है । आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोग ही नगरों में प्रतिष्ठित समझे जाने लगे हैं । व्यक्ति निरन्तर नए–नए शड्यंन्त्रो के बीच न केवल जीने के लिए विवश है अपितु मानसिक रूप से भी थोडा बहुत अस्त–व्यस्त रहने लगा है । अतः सम्बन्धो का परायापन आधुनिक जीवन में अपनेपन का एहसास बडे तेजी से मिटाता जा रहा है ।

कमलेश्वर की 'दिल्ली में एक मौत' कहानी आज के तथाकथित सभ्य, आधुनिक, फैशनपरस्त नगरों में फैलती हुई क्रूर अमानवीय और बेगानेपन को उजागर करती है । " लाल होठों में सफेद चमकते दॉत दिखाने वाली स्त्रियों का तो क्या कहना ! सबके रूमाल निकल जाते है, नाक सुरसुराने लगती है, और वापस लौटते समय फिर सब खिलखिलाहटों में खो जाता है ।" कहानी का 'मैं' सोचता है– " तैयार होकर दफ्तर जाऊँ या अब एक मौत का बहाना बनाकर आज छुट्टी ही ले लूँ – आखिर मौत तो हुई ही है और शव यात्राा में शामिल भी हुआ हूँ ।"[6]

आज की परिस्थितियों में माता–पुत्र के सम्बन्ध में बदलाव आता जा रहा है । भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' में श्यामलाल के सामने मॉ भी मानों एक समस्या बन गयी है । " घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगो के नीचे छिपाया जाने लगा । तभी श्यामलाल के सामने सहसा एक अडचन खडी हो गयी – मॉ का क्या होगा ?"[7] पिता–पुत्र के बीच अपंगता के कारण अमानवीय संबंध बन गये है । जितेंन्द्र भाटिया ने 'उत्तराधिकारी' कहानी में अपाहिज बेटे के प्रति पिता की क्रूरता को व्यक्त किया है । जहॉ पिता बेटे को पीटता हुआ कहता है – " बोल हरामी के बच्चे, तू लंगडा और अपाहिज क्यों है?.... ...... स्वस्थ बच्चे की तस्वीर के पास ले गये । बोल बनेगा ऐसा कि नहीं? लायेगा ऐसी टॉगे कि नही ।"[8]

युवा पीढी रूढ परम्पराओं और परिवारिक बन्धनों से मुक्त होना चाहती है । रमेश बक्षी की 'मातम' कहानी के पति–पत्नी को चाचा की मौत के 'मातम' में जानेकी अनुमति मिलने पर भी मातम में न जाकर पति–पत्नी शहर की सैर करके लौटते हैं । लौटने पर घर में प्रवेश करते ही मॉ टोकते हुए कहती है – " अरे रुको वहीं ! मौत के घर से आये और बिना पैर धोये ही घर में घुसे जा रहे हो ।" मेहरुन्निसा परवेज ने 'बीच का दरवाजा' कहानी में टूटते दाम्पत्य सम्बन्ध–विच्छेद के सम्बन्ध में कहती है – " राजन हमारे तुम्हारे जीवन के बीच एक दरवाजा है जो खुला है, पर मै उससे गुजरकर नहीं आ सकती ।"

समकालीन कहानीकारों ने नगरीय जीवन सम्बन्धो के खोखलेपन के विविध रूपों को उद्घाटित किया है । अचला शर्मा की 'खलनायक' में पुत्र–वधू "वसुर की उपेक्षा, ममता कालिया की 'अपत्नी' कहानी प्रेस सम्बन्धो का मजबूरन निर्वाह, मणिका मोहिनी की 'दिलेर' में फिल्मी दुनिया में नारी का शोषण, मृदुला गर्ग की 'रुकावट' में यौन संबंध, मंजुल भगत की 'दूत' में पति–पत्नी के वैवाहिक जीवन एवं अन्य अनेक कहानियों में संबंधो में आये बदलाव को देखा जा सकता है ।

आज नारी आत्मनिर्भर होकर कार्यालयों आदि संस्थानों में कार्य करने लगी है । परिणामस्वरूप सम्बन्धों में भी अप्रत्याशित परिवर्तन आया है । समकालीन कहानीकारों ने सम्बन्धो में आये बदलाव, नारी पर होने वाले अत्याचार तथा उनके जीवन के अन्य अनछुए प्रसंगो को सफलता के साथ छुआ है । राजी सेठ की श्सदियों से ', सूर्यबाला की 'गृहप्रवेश', ममिता सिंह की 'जंगल गाथा' आदि कहानियों में इसकी सार्थक अभिव्यक्ति की है ।

नगर में रहने वालों के सोच एवं मानसिकता को मनहर चौहान की कहानी 'बीस सुबहों के बाद' में देखा जा सकता है । नगरीय मानसिकता को रेखांकित करते हुए शानी ने 'जहॉपनाह जंगल' कहानी में बतलाया है कि महानगरो में एक ही बिल्डिंग मे रहने वाले एक दूसरे से पूर्णतः परिचित नही है । लूट, बलात्कार और हत्या जैसी वारदातों में आकर रक्षा करना तो दूर, वे सब कुछ जानते हुए भी अनभिज्ञ बने रहते हैं । एक रात बगल वाले फ्लैट से आ रही चीख और दर्दनाक आवाज सुनकर भी सब अपने–अपने कमरों में टुबके हुए हैं । लुटेरों के भागते ही एक–एक करके पास–पडोस के लोग अपने फ्लैट से यह कहकर बाहर आये थे– " भई, क्या हो गया ?" वस्तुतः यह कहानी महानगरों में रहने वालों की सोचप्रक्रिया, पुंसत्वहीन आक्रोश और असंवेदन शील यथार्थ को उजागर करती है ।

सांम्प्रदायिक दंगो के दौरान भी नगर निवासियाकं को काफी मानसिक तनाव और भय के दौर से गुजरना पडता है । साम्प्रदायिक दंगो में व्यक्ति की पीडा को भी हम भीष्म साहनी की 'झुटपुटा', बीर राजा की 'अरथी', तेजिन्दर की 'मेरा अपना चेहरा' आदि कहानियों में बडे ही संवेदनशील ढंग से उद्घाटित किया गया है । अवसरवादी नेताओं पर से भी व्यक्ति का विश्वास टुटता जा रहा है । नेताओं के ओछेपन को 'मै हार गई'(मन्नू भंडारी), असगर वजाहत की श्राजधानी के नीचे', डॉ. नाहीद की 'शहर सुन्द है मगर' आदि कहानियो में नगरीय जीवन के विभिन्न बिन्दुओं, कोणों, रेखाओं और विविध रंगो के शेड्स में प्रस्तुत किया है ।

समकालीन कहानीकार महानगरीय संस्कृति की गहमा–गहमी में खोती जा रही मानवीय पहचान व आपाघापी में तीन व्यक्ति की तटस्थता को भी अभिव्यक्त करना नहीं भूले हैं । इन कहानीकारों की सबसे बडी उपलब्धि यही कहा जा सकती है कि इन्होंने अपने कथा फलक पर नगरों और महानगरों की जीवन्त सच्चाई, आधुनिकता बोध की पूरी यथार्थता पूर्व सजीवता के साथ न केवल ऊजागर किया है बल्कि इनके कारक तत्वों को भी रूपायित किया है । नदी की धारा की तरह कहानी की यह विकास यात्रा निरन्तर जारी है और रहेगी ।

संदर्भ :

1.म्हानगर की मैथिली, कथावप – 78, पृ. 184
2.सविता बैनर्जी : जीने के लिए, सारिका 19 अगस्त 77, पृ. 14
3.जिन्दगी का एक दिन – मिथलेश्वर, हिन्दी कहानी 1976, पृ. 212
4.कथालेखिका, मन्नू भंडारी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा – पृ. 103
5.तीन निगाहों की एक तस्वीर – मन्नू भंडारी, पृ. 37

6.कथांन्तर, दिल्ली में एक गीत–कमलेश्वर, पृ. 141
7.नागरकथाएँ– चीफ की दावत, भीश्म साहनी, पृ. 59
8.रक्तजीवी, उत्तराधिकारी– जितेन्द्र भाटिया, पृ. 108
9.समकालीन भारतीय साहित्य अंक – 155, मई–जून 2011

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net